हिन्दी खबर
January Edition 2019

हिन्दी शिक्षा संघ (दक्षिण अफ्रीका)
HINDI SHIKSHA SANGH - SOUTH AFRICA
30 Oak Avenue, Kharwastan, Durban 4092 Telephone Number (031) 4019788
Postal Address: P O Box 56431, Chatsworth, Durban, South Africa 4030
E-mail address:
hss@telkomsa.net or
hindishikshasangh.gauteng@gmail.com

Pandit Nardevji Vedalankar
established
Hindi Shiksha Sangh (S.A.)
April 25, 1948

Our Luminaries…

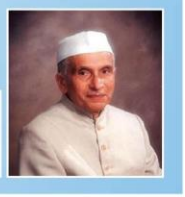

Revered Pandit Ramluckanji Tiwari

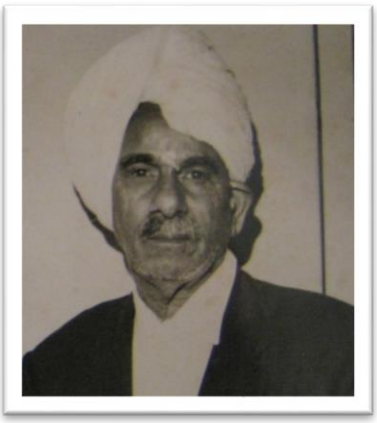

Clairwood

(A Religious, Cultural, Education, Sports, and Recreation visionary)

Pandit Ramluckan Tiwari, the third son of Pundit Sarjoo Tiwari, arrived in South Africa on June 14, 1911 on the ship called Umkuzi XXXIII. Panditji was born in 1887. On arrival in South Africa, Panditji was immediately taken to Umzinto on the South Coast of KwaZulu-Natal where he began to serve his indentureship under the British government. At the end of his indentureship he chose to settle in an area called Clairwood, which is South of the city of Durban. Panditji married Shrimati Ramkuar Panday, the daughter of Pandit Parmesar Panday. Pundit and Srimati. Tiwari had four sons (Pundits R R Maharajh, W R Maharajh, H R Maharajh and Rabi R Maharajh) and eight daughters. Such was the upbringing provided by Panditji and Srimati Tiwari that their daughters went on to play a significant role in various Temples in and around Durban. Shrimatis Leungi, Jagatpati and Damyanti were integrally involved at the Sydenham Sanathan Temple where they conducted Ramayana and Gita recitals and spearheaded community poojas. Shrimatis Jaydevi, Amrita and Prabhawati are currently playing lead roles at the Shree Gopalal Temple (Verulam), Shri Radha Krishna Temple (La Mercy) and Shri Sanathan Mandal (Stanger) respectively.

In 1916, a group of stalwarts, including Pandit Ramluckan Tiwari, formed the Clairwood Hindu Young Mens' Association and established a Community Centre for Hindus in Clairwood. After land was sourced at 24 Sirdar Road (Clairwood), the members rallied together and built a wood and iron building to serve as a venue for religious services and propagation of Hindu Culture. This Association launched a fund-raising campaign in order to improve the facilities of this Temple. Some of the early pioneers who played a very prominent role in the drive to raise funds were Pandit Ramluckan Tiwari, Shri S Dayaram, Shri Surmoo, Pandit Ramsoomer Maharaj, Shri Baboo Keshav Singh, and Shri Baboo Kaloo Singh. On June 7, 1928, Shri Thanoo Rai officially laid the foundation stone for the proposed Shri Luxmi Narayan Temple, and Pandit Sankata Maharaj officially opened this Temple on March 1, 1931. The activities at the temple were not confined to religious aspects only; the hall was used for education purposes. Due to the dire lack of educational facilities for the Indian community, in 1945 the Shri Luxmi Narayan Government-Aided Indian School was officially opened, with Shri R D Pillay as its Acting Principal. Pandit Tiwari served the Shri Luxmi Narayan Temple as President from 1942 to 1967.

Official Opening of Sri Luxmi Narayan Temple

Panditji Performing Bhagavat Katha

According to anecdotal information Panditji had performed Bhagavat Katha during a measles epidemic in Umzinto when no other persons were prepared to enter the infected area, and thus helped people overcome this disease.

Pandit Ramlakhan Tewari shared his knowledge by teaching Hindi in Clairwood and by conducting training, one-on-one, at his home and at the Shri Luxmi Narayan Temple. He also trained youngsters in puja procedure and in Hindu Priesthood. Some of his prominent students were Shri Dhalip Singh of Merebank, Pandit Sewpersadh Maharaj of Asherville and Pandit Harikrishan Maharaj of Tongaat.

Hindi Shiksha Sangh celebrates 2019 Vishwa Hindi Diwas

(World Hindi Day)

The 10 of January has been celebrated as World Hindi Day. On the 10 January 1975, the first World Hindi Conference was convened in Nagpur, India and was inaugurated by the late Prime Minister of India, Srimathi Indira Gandhi. Subsequently, January 10, was declared World Hindi Diwas. The Hindi Shiksha Sangh of South Africa, in association with the Indian Consulate General (Durban) and the Swami Vivekananda Cultural Centre, Durban, had a 2-day celebration. On the January 10, through the Hindvani medium, the following topics, among others were discussed:

1. The influence of Hindi Cinema in sustaining interest in Hindi in the Indian Diaspora;
2. Ramcharitmanas and Hindi in the Diaspora;
3. Interview with the Dr Chaitanya Prakash Yogi, Director of the Swami Vivekananda Cultural Centre;
4. Review of the work that the Natal Midlands and Pietermaritzburg Hindi pathshalas in sustaining the interest of Hindi; and
5. Interview with Pt Lalith Panday on how the bhajan and Bhakthi Sangeeth has helped in sustaining an interest in Hindi

Shri Manoj Dhanilall with Dr Prakash Yogi Chaitanya

Dr Veena Lutchman & Dr Kanada Narahari

Srm Rita Vedelankar

On the January 12 the event was further celebrated with a dynamic lecture by Dr Chaitanya Yogi of the Indian Consulate Office, Durban. Included in the programme were Nritya performances by Srm Jyothika Persadh, Dr Veena Lutchman and Dr Kannada Narahari. Certificates of appreciation were handed to all who participated in the programme. A special acknowledgement was paid to the children who presented Balvani on Hindvani.

Bharat (India) celebrates 70th Republic Day
राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा : 26 जनवरी, गणतंत्र दिवस 2019

प्रस्तावना : प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र का अपना एक ध्वज होता है, जो उस देश के स्वतंत्र देश होने का संकेत है। **भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा है, जो तीन रंगों - केसरिया, सफेद और हरे रंग से बना है और इसके केंद्र में नीले रंग से बना अशोक चक्र है। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज की अभिकल्पना पिंगली वैंकैयानंद** ने की थी और इसे इसके वर्तमान स्वरूप में 22 जुलाई 1947 को आयोजित भारतीय संविधान सभा की बैठक के दौरान अपनाया गया था। यह 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों से भारत की स्वतंत्रता के कुछ ही दिन पूर्व की गई थी। इसे 15 अगस्त 1947 और 26 जनवरी 1950 के बीच भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया गया और इसके पश्चात भारतीय गणतंत्र ने इसे अपनाया। भारत में 'तिरंगे' का अर्थ भारतीय राष्ट्रीय ध्वज है। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज में तीन रंग की क्षैतिज पट्टियां हैं, सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफेद ओर नीचे गहरे हरे रंग की पट्टी और ये तीनों समानुपात में हैं। ध्वज की चौड़ाई का अनुपात इसकी लंबाई के साथ 2 और 3 का है। सफेद पट्टी के मध्य में गहरे नीले रंग का एक चक्र है। यह चक्र अशोक की राजधानी के सारनाथ के शेर के स्तंभ पर बना हुआ है। इसका व्यास लगभग सफेद पट्टी की चौड़ाई के बराबर होता है और इसमें 24 तीलियां है।

तिरंगे का विकास : यह जानना अत्यंत रोचक है कि हमारा राष्ट्रीय ध्वज अपने आरंभ से किन-किन परिवर्तनों से गुजरा। इसे हमारे स्वतंत्रता के राष्ट्रीय संग्राम के दौरान खोजा गया या मान्यता दी गई। भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का विकास आज के इस रूप में पहुंचने के लिए अनेक दौरों से गुजरा। हमारे राष्ट्रीय ध्वज के विकास में कुछ ऐतिहासिक पड़ाव इस प्रकार हैं :-

प्रथम राष्ट्रीय ध्वज 7 अगस्त 1906 को पारसी बागान चौक (ग्रीन पार्क) कलकत्ता में फहराया गया था जिसे अब कोलकाता कहते हैं। इस ध्वज को लाल, पीले और हरे रंग की क्षैतिज पट्टियों से बनाया गया था। द्वितीय ध्वज को पेरिस में मैडम कामा और 1907 में उनके साथ निर्वासित किए गए कुछ क्रांतिकारियों द्वारा फहराया गया था (कुछ के अनुसार 1905 में)। यह भी ले ध्वज के समान था सिवाय इसके कि इसमें सबसे ऊपरी की पट्टी पर केवल एक कमल था किंतु सात तारे सप्तऋषि को दर्शाते हैं। यह ध्वज बर्लिन में हुए समाजवादी सम्मेलन में भी प्रदर्शित किया गया था।

तृतीय ध्वज 1917 में आया जब हमारे राजनैतिक संघर्ष ने एक निश्चित मोड़ लिया। डॉ. एनी बेसेंट और लोकमान्य तिलक ने घरेलू शासन आंदोलन के दौरान इसे फहराया। इस ध्वज में 5 लाल और 4 हरी क्षैतिज पट्टियां एक के बाद एक और सप्तऋषि के अभिविन्यास में इस पर बने सात सितारे थे। बांयी और ऊपरी किनारे पर (खंभे की ओर) यूनियन जैक था। एक कोने में सफेद अर्धचंद्र और सितारा भी था।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सत्र के दौरान जो 1921 में बेजवाड़ा (अब विजयवाड़ा) में किया गया यहां आंध्र प्रदेश के एक युवक ने एक झंडा बनाया और गांधी जी को दिया। यह दो रंगों का बना था। लाल और हरा रंग जो दो प्रमुख समुदायों अर्थात हिन्दू और मुस्लिम का प्रतिनिधित्व करता है। गांधी जी ने सुझाव दिया कि भारत के शेष समुदाय का प्रतिनिधित्वि करने के लिए इसमें एक सफेद पट्टी और राष्ट्र की प्रगति का संकेत देने के लिए एक चलता हुआ चरखा होना चाहिए। वर्ष 1931 ध्वज के इतिहास में एक यादगार वर्ष है। तिरंगे ध्वज को हमारे राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया गया। यह ध्वज जो वर्तमान स्वरूप का पूर्वज है, केसरिया, सफेद और मध्य में गांधी जी के चलते हुए चरखे के साथ था।

22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने इसे मुक्त भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया। स्वतंत्रता मिलने के बाद इसके रंग और उनका महत्व बना रहा। केवल ध्वज में चलते हुए चरखे के स्थान पर सम्राट अशोक के धर्म चक्र को दिखाया गया। इस प्रकार कांग्रेस पार्टी का तिरंगा ध्वज अंतत: स्वतंत्र भारत का तिरंगा ध्वज बना। **राष्ट्रीय ध्वज के रंग :** भारत के राष्ट्रीय ध्वज की ऊपरी पट्टी में केसरिया रंग है जो देश की शक्ति और साहस को दर्शाता है। बीच में स्थित सफेद पट्टी धर्म चक्र के साथ शांति और सत्य का प्रतीक है। निचली हरी पट्टी उर्वरता, वृद्धि और भूमि की पवित्रता को दर्शाती है।

अशोक चक्र : इस धर्म चक्र को विधि का चक्र कहते हैं जो तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व मौर्य सम्राट अशोक द्वारा बनाए गए सारनाथ मंदिर से लिया गया है। इस चक्र को प्रदर्शित करने का आशय यह है कि जीवन गतिशील है और रुकने का अर्थ मृत्यु है।

उपसंहार : भारतीय राष्ट्रीय ध्वज भारत के नागरिकों की आशाएं और आकांक्षाएं दर्शाता है। यह हमारे राष्ट्रीय गर्व का प्रतीक है। पिछले पांच दशकों से अधिक समय से सशस्त्र सेना बलों के सदस्यों सहित अनेक नागरिकों ने तिरंगे की शान को बनाए रखने के लिए निरंतर अपने जी